# करबला का पैग़ाम

## इन्सानियत के नाम



# करबला
# का
# पैग़ाम

## इन्सानियत के नाम



**TAHA FOUNDATION**
LUCKNOW-INDIA

THIS LITERATURE IS ABSOLUTELY FREE

Title: Karbala Ka Paigham Insaniyat Ke Nam

Pages: 56

Copies: 5000

Publisher: Taha Foundation

# CONTENTS



Please contact us

0522-400 9558, 9453 826 444

मदीने से हज़रत इमामे हुसैन[अ०] का एतिहासिक सफ़र, फिर मदीने से करबला तक होने वाली सारी घटनाऐं और फिर करबला में आप की शहादत एक ऐसा विषय है जिसके लिए जहां एक ओर सही तारीख़ का सामने होना ज़रूरी है वहीं दूसरी ओर वाक़ेआ-ए-करबला की एक बिल्कुल साफ़ तस्वीर का होना भी बहुत ज़रूरी है जिसमें करबला की हर घटना और किरदार सामने दिख जाए ताकि करबला से जुड़े हुए लोग इमाम हुसैन[अ०] की सीरत और जीवन-शैली को सामने रखकर अपनी ज़िन्दगी को भी हुसैनी ज़िन्दगी बना सकें। वाक़ेआ-ए-करबला के बारे मे बहुत कुछ लिखा और

कहा गया है और शायद दुनिया की किसी और घटना के बारे मे इतना लिखा और कहा नही गया है जितना करबला के बारे में। इसी से इस बात का अन्दाज़ा भी हो जाता है कि करबला इतनी ख़ास क्यों है।

करबला उन हालात का परिणाम है जो उस ज़माने मे इस्लामी समाज में बना दिये गये थे। समाज धीरे धीरे इस्लाम और इस्लामी एहकाम को भूल चुका था, रसूले इस्लाम[स०] की सीरत को अब कोई जानता तक नहीं था, हलाल को हराम और हराम को हलाल किया जा रहा था और इस सब से बढ़कर ख़िलाफ़त की गद्दी पर बैठा हुआ एक बेदीन और बेग़ैरत शख़्स, यज़ीद, इमाम हुसैन[अ०] से अपनी बैअत मांग रहा था। इन हालात में सिर्फ़ और सिर्फ़ अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुन्कर ही एक ऐसा रास्ता था जिस पर चलकर दीन और दीनदारी को एक बार फिर से समाज में फैलाया जा सकता था और इमाम हुसैन[अ०] ने ऐसा ही किया। यज़ीद की बैअत को ठुकरा कर और अपनी शहादत पेश करके आपने दीने इस्लाम को हमेशा हमेशा के लिए अमर बना दिया।

आख़िर में हम जनाब अज़ीज़ ज़ैदी साहब (Pacific Travels) का शुक्रिया अदा करते हैं कि उनके माली तआवुन से यह किताब आप तक पहुंची है।

TAHA FOUNDATION
LUCKNOW

हज़रते आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी, ईरान के मुक़द्दस शहर कुम के इमामे जुमा हैं और इसके साथ ही साथ आपने जवानों और समाजिक विशयों पर बहुत सी किताबें भी लिखी हैं। यहां हम आयतुल्लाह अमीनी के साथ होने वाली उस बातचीत को पेश कर रहे हैं जो वाक़ेआ-ए-करबला के बारे मे हुई थी जिसमें आपने बहुत ही खास बातों की ओर इशारा किया है।

**सवाल-1:** रसूले इस्लाम[स०] के बाद सिर्फ़ 50 साल के अन्दर इस्लामी समाज इतना बदल गया था कि रसूल के नवासे को करबला में शहीद कर दिया गया। अगर इन्सान बैठकर सोचे तो यक़ीन ही नही होता कि ऐसा भी हो सकता है। आपकी नज़र में इस गुमराही व ज़बरदस्त समाजी बदलाव का कारण क्या था?

**जवाब:** करबला में जो कुछ हुआ वह इस्लामी

तारीख़ बल्कि आम इन्सानी तारीख़ की एक बड़ी ही अजीबो ग़रीब और सब से अलग दास्तान है। करबला के अजीबो ग़रीब होने का कारण यह नहीं है कि उससे पहले दुनिया में कहीं इतना ज़ुल्म नहीं हुआ था बल्कि ऐसे सेकड़ों वाक़ेआत हैं जहां बहुत बड़े-बड़े ज़ुल्म देखने को मिलते हैं। करबला क्यों सब से अलग और सब से ख़ास है, इसके कुछ कारण यहां पेश किये जा रहे हैं:

(1) करबला का सब से बड़ा किरदार हज़रत इमाम हुसैन[अ०] हैं जो रसूले इस्लाम के नवासे हैं जिन की फ़ज़ीलत में बहुत सी हदीसें मौजूद थीं और इब्ने ज़ियाद के सिपाहियों ने भी उन हदीसों को सुन रखा था।

(2) इब्ने ज़ियाद की उसी फ़ौज में रसूल के ऐसे बहुत से सहाबी भी पाए जाते थे जिन्होंने अपनी जवानी या नौजवानी में इमाम हुसैन[अ०] से रसूल की मोहब्बत और आप के बारे में रसूल की हदीसों को सुन या पढ़ रखा था।

(3) इमामे हुसैन[अ०] ने छोटे से छोटा ऐसा कोई भी काम नहीं किया था जिसके कारण उन पर इतना ज़ुल्मो सितम किया जाता।

(4) इमामे हुसैन[अ०] ऐसे लोगों के हाथों क़त्ल हुए थे जो रोज़े-नमाज़ के पाबन्द थे, जो खुद को मुसल्मान और रसूले इस्लाम[स०] का मानने वाला कहते थे।

(5) वाक़ेआ-ए-करबला रसूले इस्लाम[स०] की वफ़ात

के सिर्फ़ पचास साल के बाद ही पेश आ गया था, अभी रसूल के ऐसे बहुत से सहाबी ज़िंदा थे जिन्हों ने खुद अपनी आंखों से इमाम हुसैन[अ०] से रसूल की बे पनाह मोहब्बत को देखा था।

यह वह कुछ ख़ास बातें थीं जिनकी वजह से वाक़ेआ-ए-करबला सारी इन्सानी तारीख़ का सब से अजीबो ग़रीब और दिल देहला देने वाला वाक़ेआ बन गया है। वक़ेआ-ए-करबला हुआ ही क्यों, इसके बारे में नीचे कुछ बातों को पेश किया जा सकता हैः

1- जाहिलिय्यत के ज़माने यानी इस्लाम से पहले के अरब समाज की सब से बड़ी पहचान **जातिवादी और नस्ली तास्सुब, बदले और कीने की भावना** जो रसूले इस्लाम[स०] के आने के बाद वक़्ती तौर पर ठण्डी पड़ गई थी लेकिन आप के बाद दोबारा फल फूल गई जिसके इस्लामी इतिहास में बहुत से नमूने आसानी के साथ मिल जाते हैं।

2- **ईमान की कमज़ोरीः** मुसल्मानों का एक ग्रुप ऐसा भी था जिसका ईमान कमज़ोर था और उस ग्रुप के दिल में हज़रत अली[अ०] के विरूद्ध कीना और नफ़रत भरी हुई थी क्योंकि पिछली जंगों में उस ग्रुप में से हर आदमी का कोई न कोई रिश्तेदार हज़रत अली[अ०] के हाथों क़त्ल हो गया था। जंगे बद्र में दुश्मन के क़रीब सत्तर लोग क़त्ल हुए थे जिनमें से अधिकतर सिर्फ़

हज़रत अली[अ०] के हाथों जहन्नुम का ईंधन बन गए थे। इसी जंग में अमीरे शाम मुआविया का भाई हन्ज़ला इब्ने अबु सुफ़यान भी क़त्ल हुआ था जिसकी गर्दन पर हज़रत अली[अ०] की तलवार चली थी और दूसरा भाई, उमर, क़ैदी बना लिया गया था। जंगे जमल, सिफ़्फ़ीन और नहरवान में तो मुसल्मान आपस में ही लड़ रहे थे और यह जंगें अभी बहुत पुरानी भी नहीं हुई थीं। इन जंगों में शाम, कूफ़े और बसरे के बहुत से लोग क़त्ल हुए थे और अब करबला में उन्हीं क़त्ल होने वालों के रिश्तेदार भी मौजूद थे, सामने की बात है कि उनके दिलों में हज़रत अली[अ०] के विरूद्ध कीना भरा पड़ा था।

3- **इब्ने ज़ियाद के फ़ौजियों में माल-दौलत, शोहरत और ओहदे की लालचः** इब्ने ज़ियाद की फ़ौज का कमाण्डर उमरे साअ़द था जिस से कहा गया था कि अगर तुमने हुसैन को कत्ल कर दिया तो तुम्हें पूरे "मुल्के रै" की हुकूमत देदी जाएगी और यह उमरे साअ़द की ज़िंदगी की सब से बड़ी ख़्वाहिश थी जो अब पूरी हो रही थी। इसके अतिरिक्त इब्ने ज़ियाद ने अपनी फ़ौज में बहुत सा माल पहले ही बांट दिया था और आगे भी बहुत कुछ देने का वादा किया था।

4- **मुआविया का मौक़े से फ़ायदाः** अमीरे शाम मुआविया ने इस मौक़े से भरपूर फ़ायदा अठाया था और हज़रत अली[अ०] के विरूद्ध खुल्लम खुल्ला प्रोपैगन्डा शुरू

कर दिया था। आप के फ़ज़ाएल को बयान करने पर पाबन्दी लगा दी थी और साथ ही हदीस के रावियों पर माल व दौलत की बारिश कर दी थी और उनके लिए सरकारी हुक्म जारी कर दिया था कि वह हज़रत अली[अ०] की बुराई में जितनी हदीसें लिख सकते हों लिखें। मुआविया ने उसमान के क़त्ल का बदला लेने के बहाने से भी माहौल को खूब ख़राब किया और हालात यह हो गए कि आम तौर पर नमाज़े जुमा के खुत्बों में हज़रत अली[अ०] की बुराई की जाने लगी।

**5- इब्ने ज़ियाद की फ़ौज पर फ़ौज के सरदार का डरः** मुआविया ने हज़रत अली[अ०] के फ़ज़ाएल बयान करने पर पाबन्दी लगा दी थी और हज़ारों शियों को सिर्फ़ इस जुर्म में क़त्ल कर दिया था कि वह हज़रत अली[अ०] के शिया थे। खुद इब्ने ज़ियाद ने कूफ़े में घुसते ही हज़रत मुस्लिम इब्ने अक़ील और हानी को दर्दनाक तरीक़े से शहीद कर दिया था और सारे कूफ़े शहर को धमकी दे दी थी कि अगर किसी ने भी हुसैन[अ०] का साथ दिया तो उसके साथ भी वही सुलूक किया जाएगा जो मुस्लिम इब्ने अक़ील के साथ किया गया है।

**6- मुआविया के ज़माने के लोगः** इन सब के अलावा इब्ने ज़ियाद के सिपाहियों में से अक्सर की उम्र पचास साल के आस पास थी जिन्होंने रसूले इस्लाम[स०] को देखा ही नहीं था या एहलेबैत[अ०] के फ़ज़ाएल को अपने कानों से सुना ही नहीं था और जो सिपाही ज़्यादा

उम्र के थे भी उन्होंने या तो रसूले इस्लाम[स०] को देखा ही नहीं था और अगर देखा भी था तो अपने बचपने या नौ जवानी में। यह वह लोग थे जिन्हों ने मुआविया की हुकूमत में आंखें खोली थीं और इसी में जवान हुए थे। इनके लिए जो कुछ थी वह बस अमीरे शाम मुआविया की हुकूमत थी और यही इस्लाम था।

ऊपर जो कुछ बयान किया गया है अगर उसे देखा जाए तो इन हालात में इमाम हुसैन[अ०] का शहीद किया जाना कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि जहां जिहालत, गुमराही, जातीवादी और नस्ली तास्सुब, दुनियादारी, माल व दोलत की हवस, ग़लत प्रोपेगन्डा और बदले की भावना पाई जाएगी वहां यह सब तो होगा ही। क्या हज़रत अली[अ०] उन्हीं लोगों के हाथों शहीद नहीं हुए थे जो अपने मुसलमान होने का दावा करते थे? तभी तो इब्ने ज़ियाद ने अपनी फ़ौज से कहा थाः "ऐ खुदा की फ़ौज के सिपाहियो! मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें जन्नत की बशारत दे रहा हूं।" हालत यह थी कि यह लोग इमाम हुसैन[अ०] को इस्लामी हुकूमत का बाग़ी कहते थे और यहां तक कहा जा रहा था कि हुसैन[अ०] ने मुसलमानों के ख़लीफ़ा के विरुद्ध बग़ावत कर दी है और इसलिए उनका क़त्ल किया जाना वाजिब है! यह थे उस समय के हालात।

**सवाल-2:** वाक़ेआ-ए-करबला के बारे मे तारीखी

और हदीसी किताबों पर भरोसा करते हुए अलग अलग लोगों ने अलग अलग नज़रिये और विश्लेषण पेश किये हैं। सवाल यह है कि इमामे हुसैन अ० करबला से अपना कौन सा मक़सद पूरा करना चाहते थे?

**जवाबः** करबला से इमामे हुसैन अ० के मक़सद को सही मायने से पहचानने के लिए सब से अच्छा है कि खुद इमाम हुसैन अ० की हदीसों पर निगाह डाली जाए। मदीने से निकलते समय आप ने मोहम्मद इब्ने हनफ़िय्या को जो वसीयतनामा दिया था उसमें आप ने लिखा था कि **इन्नी लम् अख़रुज् शर्रन् व ला बतिरन् व ला मुफ़सिदन् व ला ज़ालिमन् व इन्नमा ख़रजतु लि त-ल-बिल इस्लाहि फ़ी उम्मति जद्दी, उरीदु अन् आमुरा बिल मारूफ़ि वन्हा अनिल मुन्करि व असीरु बि सी-रति अबी व जद्दी** यानी मैं फ़साद फैलाने या ज़ुल्म करने के लिए नहीं निकल रहा हूं बल्कि मैं तो अपने नाना की उम्मत की इस्लाह के लिए अपना घर बार छोड़ रहा हूं, मैं चाहता हूं कि लोगों को अम्र बिल मारूफ़ (नेकी और सच्चाई का रास्ता दिखाऊं) और नही अनिल मुन्कर करूं (बुराईयों और ग़लत कामों से रोकूं) और अपने बाबा और नाना की सीरत को लोगों के बीच फैलाऊं।

इमामे हुसैन अ० ने यहां पर तीन चीज़ों को अपने मिशन का मक़सद बताया हैः एक मुसलमानों की

इस्लाह, दूसरे अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुनकर और तीसरे अपने बाबा और नाना की सीरत को फैलाना। अगर थोड़ा सा भी ग़ौर किया जाए तो आसानी से समझ में आ जाएगा कि आप का सब से बड़ा मक़सद अपने नाना की उम्मत की इस्लाह करना था जिसने रसूले इस्लाम[स०] की सीरत को बिल्कुल भुला दिया था और जो अख़लाक़ी, इबादी, सियासी, समाजी और आर्थिक यानी ज़िंदगी के हर मैदान में बहक गई थी। इमाम का मक़सद यह था कि अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुनकर के द्वारा इस गुमराही को ख़त्म करके उम्मत को सीधे रास्ते पर लाया जाए। इमाम हुसैन[अ०] ने अपने इस अहम काम को कई भागों में पूरा किया।

**पहला भाग, मदीने में:** मुआविया के मरने के बाद उसके बेटे यज़ीद ने मदीने के गर्वनर वलीद के लिए हुक्म जारी किया कि फ़ौरन हुसैन[अ०] से बैअत ले लो और बैअत न करें तो वहीं क़त्ल कर दो लेकिन इमाम[अ०] ने यज़ीद की बैअत करने से मना कर दिया क्योंकि आप यज़ीद की हुकूमत को इस्लामी और शरई हुकूमत मानते ही नहीं थे और अगर आप बैअत कर लेते तो इसका मतलब यह होता कि आप यज़ीद की हुकूमत को इस्लामी और शरई हुकूमत मान रहे हैं। इसलिए आप ने बैअत करने से साफ़ साफ़ मना कर दिया और अपनी

मुख़ालेफ़त को जताने के लिए मदीने से मक्के की तरफ़ चल पड़े जो कि खुद नही-अनिल-मुन्कर की एक बहतरीन मिसाल थी।

**दूसरा भाग, मक्के में:** इमाम हुसैन[अ०] चाहते थे कि मक्के में ही रुके रहें और यहीं रह कर दुनिया के चारों कोनों से हज के लिए आने वाले मुसलमानों के सामने यज़ीद की हुकूमत के विरुद्ध अपनी पॉलिसी का एलान करें और यह भी एक तरह का अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुनकर ही था। मक्के में दो नई घटनाएं सामने आईं। पहली तो यह कि इस बीच इमाम हुसैन[अ०] के बैअत न करने और आप के मक्के में रुके रहने का कूफ़े के सारे शियों को धीरे धीरे पता चल गया था और उन लोगों ने हज़ारों ख़त लिख कर आपको कूफ़े आने की दावत दे दी थी। दूसरी ख़ास घटना यह थी कि इमाम हुसैन[अ०] को यह ख़बर भी मिल गई थी कि यज़ीद ने अपने कुछ आदमियों को मक्के भेज दिया है ताकि वह चोरी छिपे इमाम को मक्के में ही क़त्ल कर दें।

**तीसरा भाग, कूफ़े की तरफ़:** इन दो घटनाओं के कारण हालात पूरी तरह बदल गए थे। एक तरफ़ इमाम हुसैन[अ०] अब कूफ़े में रुक नहीं सकते थे क्योंकि अगर वहीं आप को शहीद कर दिया जाता तो ख़ाना-ए-काबा की बेएहतेरामी हो जाती और आप का खून भी बेकार चला जाता। इसलिए आप ने फ़ैसला किया कि अब

मक्के को छोड़कर आगे बढ़ा जाए। दूसरी तरफ़ कूफ़े के शियों ने भी आप को कूफ़े आने की बार बार दावत दी थी और ऊपरी हालात से ऐसा ही लग रहा था कि कूफ़े वाले आप का खुले दिल से स्वागत करेंगे और जंग के बिना ही हुकूमत मिल जाएगी। इसलिए आपने कूफ़े ही जाने का फ़ैसला कर लिया और इतनी एहतियात ज़रूर की कि अपने भाई जनाबे मुस्लिम इब्ने अक़ील[अ०] को कूफ़े वालों के नाम अपना एक ख़त देकर पहले ही भेज दिया ताकि जनाबे मुस्लिम[अ०] हालात को देखभाल कर आप को अपनी रिपोर्ट दे दें। जनाबे मुस्लिम कूफ़े पहुंच गए और वहां से उन्होंने ख़त लिख कर भेजा कि कूफ़े के बहुत से लोगों ने मेरी बैअत कर ली है और अब आप के इन्तिज़ार में आंखें बिछाए हुए हैं। इस रिपोर्ट के बाद इमाम हुसैन[अ०] ने कूफ़े जाने का आख़िरी फ़ैसला कर लिया क्योंकि इससे एक तरफ़ तो आप को अपने मिशन को आगे बढ़ाने का एक अच्छा अवसर मिल रहा था और दूसरी तरफ़ जनाबे मुस्लिम[अ०] की रिपोर्ट और कूफ़ियों के ख़तों की बुनियाद पर जंग के बिना ही शियों की एक बहुत बड़ी आबादी का सहयोग मिलने की उम्मीद भी थी।

**चौथा भाग, हुर[अ०] के लश्कर का सामनाः** इमाम हुसैन[अ०] चाहते थे कि जितनी जल्दी हो सके कूफ़े पहुंच जाएं लेकिन रास्ते ही में आपको हुर[अ०] अपने लशकर के साथ मिल गए जिन्हें इसलिए भेजा गया था कि आप को आगे बढ़ने से रोक दें। इमाम हुसैन[अ०] ने हुर से फ़रमाया कि कूफ़ियों ने मुझे कूफ़े बुलाया है, इसलिए तुम हमारे रास्ते से हट जाओ। हुर[अ०] ने कहा मुझे इसकी कोई ख़बर नहीं है, मुझसे तो बस इतना कहा गया है कि आप को यहीं क़ैद कर लूं और कूफ़े में इब्ने ज़ियाद के पास ले जाऊं।

हालात एकदम बदल गए थे और इब्ने ज़ियाद के सामने झुक जाना यज़ीद की बैअत कर लेने जैसा ही था जो इमामे हुसैन[अ०] कभी नहीं कर सकते थे। आपने हुर[अ०] की बात मानने से इन्कार कर दिया और कूफ़े के बजाए एक दूसरी तरफ़ अपने लश्कर को मोड़ दिया।

**पाचवां भाग, करबला मेंः** इमाम हुसैन[अ०] आगे

बढ़ने लगे और हुर[अ०] भी जंग किए बिना ही आप के साथ हो लिए, यहां तक कि सब के सब कबरला पहुंच गए। जैसे ही कबरला पहुंचे वैसे ही हुर के पास इब्ने ज़ियाद का हुक्म आया कि इमाम हुसैन[अ०] को यहीं रोक लो और आगे मत बढ़ने दो। यहां पहुंच कर हालात अचानक फिर से पूरी तरह बदल गए थे। इमाम हुसैन[अ०] न ही कूफ़े जा सकते थे और न ही कहीं और। अब इमाम के पास सिर्फ़ दो रास्ते थे, या तो इब्ने ज़ियाद के सामने झुक जाते और उस गंदे माहौल में कुछ दिन या कुछ साल और घुट घुट कर ज़िन्दा रह लेते या फिर दुश्मन का मुक़ाबला करते और मरदानावार जंग करके शहादत को गले लगा लेते और हमेशा हमेशा के लिए ज़िन्द ए जावेद हो जाते।

पहला रास्ता इमाम हुसैन[अ०] के मिशन और सीरत के खिलाफ़ था इसलिए आप ने दूसरे रास्ते को चुना क्योंकि यही सब से अच्छा रास्ता था और यही अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुन्कर की सब से अच्छी मिसाल थी। आप[अ०] और आप के बावफ़ा साथियों ने रोज़े आशूरा मरदानावार दुश्मन की एक बहुत बड़ी फ़ौज से जंग की और आख़िर में शहादत को गले लगा लिया और मरते मरते दुनिया को दीनदारी, अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुन्कर, ज़ुल्म और ज़ालिम से मुक़ाबले और न्याय का सबक़ दे गए। इमाम

हुसैन[अ०] और उनके सहाबी करबला में शहीद तो हो गए लेकिन मर के भी जंग जीत गए। यह वह रास्ता है जो आज के ज़ामाने में भी बल्कि हर ज़माने और हर जगह अपनाया जा सकता है।

**सवाल-3:** अभी ऊपर वाले सवाल में हमने देखा कि इमाम हुसैन[अ०] ने अलग अलग हालात में अलग अलग रास्तों को चुना। क्या हम यह कह सकते हैं कि इमाम[अ०] हालात के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारी का फ़ैसला करते और योजना बनाते थे? यानी पहले से इमाम[अ०] ने कोई रास्ता नहीं सोच रखा था?

**जवाबः** इमाम हुसैन[अ०] का सब से बड़ा मक़सद अपने नाना और बाबा की सीरत को फैलाना, हक़ीक़ी इस्लाम को ज़िन्दा करना और उन दीनी Values को समाज में फैलाना था जिन्हें लोग भूल चुके थे और आप अम्र-बिल-मारूफ़ और नही-अनिल-मुन्कर के द्वारा इस अहम काम को पूरा करना चाहते थे जिसकी शुरूआत यज़ीद की बैअत से इन्कार के द्वारा हुई और जो आप की शहादत पर जाकर ख़त्म हुई। इस तरह हम कह सकते हैं कि आप की नज़र में आप का मक़सद शुरू से ही पूरी तरह साफ़ था और शुरू से ही सारे हालात का आप को इल्म था, बस इतना हुआ कि आप ने अलग अलग हालात में समय के अनुसार अलग अलग रास्ते को चुना जैसा कि होना भी चाहिए था।

**सवाल-4**: तारीख़ में मिलता है कि अभी इमाम हुसैन[अ०] का सामना हुर[अ०] और उनके लश्कर से नहीं हुआ था कि जनाबे मुस्लिम[अ०] की शहादत की ख़बर आप को मिल गई थी और आप को मालूम हो गया था कि कूफ़े वाले अपने वादे से फिर गए हैं, उसके बाद भी क्यों आप कूफ़े ही की तरफ़ आगे बढ़ते रहे और अपना रास्ता नहीं मोड़ा ?

**जवाबः** इमाम हुसैन[अ०] को सालबया के इलाक़े में जनाबे मुस्लिम[अ०] की शहादत की ख़बर मिली थी, ज़ाहिर सी बात है कि यहां भी इमाम[अ०] को नए हालात के अनुसार पॉलिसी बनाना थी और आप ने ऐसा ही किया। आपने सब से पहला काम यह किया कि जनाबे मुस्लिम[अ०] की शहादत को छुपाए बिना अपने सारे सहाबियों के बीच में रखा और उनसे उनकी राए जानना चाही। जनाबे अक़ील की औलाद ने कहा कि मुस्लिम की शहादत का बदला लेना ज़रूरी है और अगर हम ऐसा नहीं कर सके तो इसी मक़सद के लिए अपनी जान दे देंगे। इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया कि मुस्लिम की शहादत के बाद अब ज़िन्दगी का कोई महत्व नहीं रह जाता है। साथ ही कुछ सहाबियों ने यह भी कहा कि खुदा की क़सम! आप मुस्लिम[अ०] थोड़े ही हैं, जैसे ही आप कूफ़े में दाख़िल होंगे सारे कूफ़े वाले आप के स्वागत के लिए आ जाएंगे क्योंकि उन्होंने आप को बार बार ख़त लिख कर

बुलाया है।

इन नए हालात में इमाम के सामने दो ही रास्ते थे, या तो कूफ़े चले जाएं या किसी और तरफ़ निकल जाएं। इमाम ने पहले रास्ते को चुना क्योंकि अभी आप कूफ़ियों से मायूस नहीं हुए थे जैसा कि आप के साथियों का भी यही ख़्याल था, दूसरे यह कि आप का ख़्याल था कि अगर कूफ़ियों ने अपने वादे पर अमल नहीं भी किया तो कूफ़े में रह कर आप अच्छी तरह अपना काम कर सकते हैं। इसलिए आप ने यही फ़ैसला किया कि कूफ़े ही की तरफ़ आगे बढ़ते रहें।

**सवाल-5:** कुछ किताबों में यह भी मिलता है कि मदीने से आपके बाहर निकलने का एक कारण लोगों ख़ासकर कूफ़े वालों की दावत और उनके ख़त थे। यहां तक कि खुद इमाम की कुछ हदीसों से भी ऐसा ही समझ मे आता है। सवाल यह है कि कूफ़े वालों की दावत ने आप के मिशन पर किस हद तक असर डाला था?

**जवाबः** इसमें तो कोई शक नहीं है कि कूफ़ियों के ख़तों ने आप के इराक़ की ओर जाने पर बहरहाल प्रभाव डाला था लेकिन कूफ़ियों की दावत आप के अस्ल मिशन का कारण बिल्कुल नहीं बनी थी क्योंकि जिस समय आप मदीने से निकले हैं उस समय तक कूफ़ियों का कोई ख़त आप तक नहीं आया था, जितने भी ख़त आए थे वह सब के सब मक्के में आए थे।

**सवाल-6:** ज़ुल्म और बुराई से मुक़ाबला वह सब

से खास चीज़ है जो मक्के में आप के खुतबों में बराबर दिखाई पड़ती है, क्या आज के ज़माने में हमारे लिए भी ज़रूरी है कि हम भी इमाम की सीरत पर चलते हुए आज के समाज में आप के बताए हुए रास्ते पर चलें ?

**जवाबः** जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि इमाम हुसैन[अ०] का करबला से सब से बड़ा मक़सद उम्मत की इस्लाह और नाना की सीरत को समाज मे फिर से ज़िन्दा करना था जिसमें सारी दीनी Values और एहकाम को वापस समाज में फैलाना और हर तरह के ज़ुल्म, बुराई, गुमराही, बेदीनी और बेअख़लाक़ी का मुक़ाबला करना खुद बखुद शामिल हो जाता है। साथ ही इमाम हुसैन[अ०] का मक़सद सिर्फ़ यह नहीं था कि उस समय के हालात के अनुसार बस अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर लें बल्कि आप चाहते थे कि प्रैक्टिकली अपने चाहने वालों को दीनदारी, इस्लाम और दीनी Values पर चलने का रास्ता दिखाएं ताकि हुसैन[अ०] के मानने वाले हर ज़माने में हुसैन[अ०] की सीरत पर अमल कर सकें। **कुल्लो यौमिन आ़शूरा, कुल्लो अरज़िन कर्बला** का मतलब यही तो होता है।

**सवाल-7:** मदीने से कबरला तक के रास्ते में अख़लाक़ी और इन्सानी Values इमाम हुसैन[अ०] की सीरत में जगह जगह दिखाई पड़ती हैं जबकि उसके मुक़ाबले में बदअख़लाक़ी और बदकिरदारी दुश्मन की फ़ौज के हर

सिपाही के अन्दर कूट कूट कर भरी हुई दिखाई देती है, एक तरफ़ अच्छाइयाँ ही अच्छाइयाँ तो दूसरी तरफ़ बुराइयाँ ही बुराइयाँ। अगर हम आशूरा को अख़लाक़ी ऐतेबार से देखना चाहें तो इमामे हुसैन[अ०] और दुश्मन के किरदार को किस तरह परखा जा सकता है। इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों का किरदार हमारे लिए क्या पैग़ाम देता है और ऐसा किया हुआ कि दुश्मन का इतना घिनौना किरदार सामने आया ?

**जवाबः** ज़ाहिर सी बात है कि इमाम हुसैन[अ०] और यज़ीद का मुक़ाबला एक दूसरे से किसी भी तरह नहीं किया जा सकता, हुसैन[अ०] एक ऐसे शख़्स का नाम है जिनका ख़ानदान अपनी शराफ़त और बुज़ुर्गी के लिए सारी दुनिया के लिए नमूना है, जिनके उठने-बैठने और चलने-फिरने में भी दीन और दीनदारी दिखाई पड़ती है, दुसरी तरफ़ यज़ीद है जिसका ख़ानदान सारी दुनिया में अपनी बदनामी के लिए मशहूर है जिसमें ज़ुल्म, सूद, जुआ, शराब, बन्दरों से खेलना, दूसरी सारी बुराईयाँ खुल्लम खुल्ला दिखाई पड़ती हैं। यज़ीद उस इन्सान का नाम है जो दीने इस्लामी ख़िलाफ़त की गद्दी पर बैठकर दीन का मज़ाक़ उड़ा रहा था, हलाले मोहम्मदी को हराम और हरामे मोहम्मदी को हलाल कर रहा था।

इमाम हुसैन[अ०] खुद तो इन्सानी और अख़लाक़ी Values का सब से बड़ा नमूना थे ही, आप ने अपने

चाहने वालों के अन्दर भी दीनदारी, अख़लाक़, नेक किरदारी, शुजाअत, सच्चाई, वफ़ादारी, जिहाद, ईसार, हक़ की हिमायत, ज़ुल्म से मुक़ाबले वग़ैरा का अनमोल जज़्बा पैदा कर दिया था जिस का नमूना हमें आशूरा के दिन करबला में नज़र आता है। आप ने ऐसे ऐसे इन्सान करबला में तैयार कर दिये थे कि तारीख़ में उनकी मिसाल नहीं मिलती।

दूसरी तरफ़ यज़ीद और उसके सिपाही भी अपनी बद किरदारी और बुराईयों में सारी दुनिया पर भारी हैं। खुद यज़ीद एक अय्याश, बदकिरदार, सूद ख़ोर, दुनिया परस्त और हुकूमत और ताक़त का ऐसा दीवाना था कि अपने मक़्सद के लिए गिरे से गिरा कोई भी काम कर सकता था और उसने ऐसा किया भी। उसके सिपाही भी उसी की तरह ही थे और इसीलिए उसका साथ भी दे रहे थे। यज़ीद ने बसरे और कूफ़े की गर्वनरी इब्ने ज़ियाद को दे दी थी ताकि वह इमाम हुसैन[अ०] से जंग करे, "मुल्के रै" की हुकूमत उमर इब्ने साअद को दे दी थी ताकि इमाम हुसैन[अ०] के मिशन को दबा दे। खुद इब्ने ज़ियाद ने भी कूफ़ियों को बहुत सा माल और दोलत दे रखी थी और आगे भी देने का वादा कर रखा था, साथ ही यह भी कह दिया था कि अगर तुमने मेरा साथ नहीं दिया तो शाम से फ़ौजें आ रही हैं वह तुम्हें ख़त्म कर देंगी। इब्ने ज़ियाद के सिपाहियों को आने वाली एक रंगीन दुनिया और अय्याशियाँ नज़र आ रही थीं इसलिए उन्होंने बड़े

आराम से वह सब कुछ कर लिया जो कोई भी शरीफ़ इन्सान कभी नहीं कर सकता जैसे छोटे छोटे बच्चों पर पानी बन्द कर देना, जंग की शुरूआत, छ महीने तक के बच्चे को शहीद कर देना, सामान लूट लेना, ख़ैमों को आग लगा देना, लाशों पर घोड़े दौड़ा देना, औरतों के सरों से चादरें छीन लेना वग़ैरा। उन लोगों के लिए यह सब कर देना कोई बड़ी बात ही नहीं थी क्योंकि यह लोग दुनिया में गले गले डूब चुके थे। आज आशूरा को गुज़रे हुए हज़ारों साल बीत चुके हैं लेकिन जिस तरह इमामे हुसैन[अ०] और उनके साथियों की सीरत आज भी हमारे लिए नमूना है बिल्कुल इसी तरह यज़ीद और उसके फ़ोजियों की बदकिरदारी भी हमारे लिए इबरत लेने की बड़ी अच्छी मिसाल है।

**सवाल-8:** आशूरा अच्छे अख़लाक़ और नेक किरदारी का सबक़ देने के अतिरिक्त हमें और भी बहुत कुछ सिखाती है। वह और भी बहुत कुछ क्या है जो हम करबला से सीख सकते हैं?

**जवाब:** तारीख़ की ख़ास बात यही होती है कि इस से अगले समय में आने वाले लोग बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। किसी भी ज़माने के लोग अपने पिछले ज़माने वालों से अपनी ज़िन्दगी और हालात को अच्छा बनाने के लिए तजुरुबा हासिल कर सकते हैं। तारीख़ में करबला की जैसी मिसालें बहुत मुश्किल से ही मिलेंगी जहां इन्सानों के लिए सीखने और समझने के लिए

इतना बहुत कुछ पाया जा रहा हो। करबला में इमामे हुसैन[अ०] को अपनी शहादत इसलिए पेश करना पड़ी थी क्योंकि इमाम[अ०] को इस बात का अन्दाज़ा हो गया था कि दीन ख़तरे में है, हक़ को पैरों तले रोंदा जा रहा है, लागों को बातिल बड़ा हसीन दिख रहा है, रसूले इस्लाम की सीरत और सुन्नत को लोग भुला चुके हैं और दीन में नई-नई बातें और बिदअतें ठूंस दी गई हैं...किसी भी ज़माने में और किसी भी जगह अगर ऐसे हालात बन जाएं और इन्सान फ़ैसला ना कर पा रहा हो कि क्या करे तो इन हालात में सब से अच्छा रास्ता यह है कि वह करबला ही के आईने मे हालात को देखे, इमामे हुसैन[अ०] और उनके साथियों के और दुश्मन की फ़ौज के किरदार, आमाल और सीरत को देखने के बाद दोनों तरफ़ के लोगों के अन्जाम को देखे कि क्या हुआ, यह सब देखने के बाद अपनी ज़िम्मेदारी तय करे और उस पर अमल करना शुरू कर दे।

करबला के बारे में एक बहुत ख़ास चीज़ यह भी है कि यह पता होना चाहिए कि अस्ली जीत किसकी हुई और किसकी हार हुई। हो सकता है कि कुछ लोग यह समझ बैटें कि यज़ीद जीत गया और हुसैन[अ०] हार गए क्योंकि हुसैन[अ०] के सारे साथी तो शहीद हो गए थे और जंग मे जिसकी जान गई वह हार गया लेकिन अगर कोई थोड़ा सा भी ग़ौर करे तो आसानी से उसकी समझ मे आ

जाएगा कि किसी का सिर कट जाने से उसकी हार जीत का फ़ैसला नही किया जा सकता बल्कि हार या जीत का फ़ैसला जंग के रिज़ल्ट को देखकर किया जाता है।

इमामे हुसैन[अ०] और उनके साथियों के सामने बस दो ही रास्ते थे, **या** तो यज़ीद की बैअत कर लें और उसकी बेदीन हुकूमत के दीनी होने का एलान कर दें और कुछ दिन या कुछ साल और एक ज़िल्लत व ख़्वारी की ज़िन्दगी जी लें और आख़िर में जैसे दूसरे लोग दुनिया से जाते हैं यह लोग भी एक दिन चले जाएं **या** फिर ज़िल्लत मे घुट-घुट कर जीने के बजाए यज़ीद की बैअत को ठुकरा दें और ज़ालिम के ख़िलाफ़ उठ खड़े हों चाहे सिर ही क्यों ना कट जाए। इमामे हुसैन[अ०] और उनके साथियों ने इस दूसरे रास्ते को ही चुना। इस रास्ते को चुनने के जो फ़ायदे दुनिया वालों को हुए उनमे से कुछ को यहां बयान किया जा रहा है:

1. दीनदारी का सबक़ और इस्लामी Values की हिफ़ाज़त
2. ज़ालिम से लड़ने और न्याय को फैलाने का जज़बा
3. Human Values का फैलाव
4. Moral Values का फैलाव
5. दीनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का जज़बा
6. ख़ुदा की मर्ज़ी और ख़ुशी हासिल करने का जज़बा
7. शहादत जैसे अज़ीम मरतबे तक पहुंचने की ललक

यह वह चीज़ें हैं जो इमामे हुसैन[अ०] और उनके साथियों ने सारी दुनिया को सिखाई हैं, अब इसके बाद कैसे कहा जा सकता है कि हुसैन[अ०] हार गये और यज़ीद जीत गया? क्योंकि हारता वह है जो अपने मक़सद में कामयाब ना हो सके और इमामे हुसैन[अ०] तो अपने मक़सद मे पूरी तरह कामयाब हो गये थे। इमामे हुसैन[अ०] ने अपना सिर दे के सारी दुनिया को सिर उठा के जीने का जो सलीक़ा सिखाया है वह क़यामत तक के इन्सानों के लिए अन्धेरी राहों मे आगे बढ़ने का बहुत बड़ा सहारा है। दूसरी तरफ़ यज़ीद और इब्ने ज़ियाद की फ़ौजों ने इमामे हुसैन[अ०] के साथ जो कुछ भी किया वह भी दुनिया के लिए एक बहुत बड़ी इबरत है क्योंकि यज़ीद की फ़ौज का हर सिपाही अगर चाहता तो इमामे हुसैन[अ०] के साथ आ जाता और बातिल से जंग करके शहादत के अज़ीम दर्जे तक पहुंच जाता लेकिन जनाबे हुर[अ०] के अलावा कोई आगे न बढ़ा। अगर यह लोग इतना भी कर लेते कि यज़ीद की फ़ौज में शामिल न होते और अपने अपने घरों को चले जाते तो कम से कम इमामे हुसैन[अ०] के मुजरिम तो न होते लेकिन दुनिया की मोहब्बत और मालो-दौलत की लालच ने उन्हें इतना गुमराह और अन्धा बना दिया था कि सब के सब जंग में शरीक भी हुए और इमामे हुसैन[अ०] के खून से सब ने अपने हाथ भी रंगे और हमेशा के लिए जहन्नम का ईंधन बन गए। इनमें से कुछ लोग करबला के बाद ज़िन्दा

भी बचे और उनके हाथ दुनिया की कुछ दौलत भी आई लेकिन कुछ ही दिनों के बाद न जाने कैसा कैसा अज़ाब झेलने के बाद इस दुनिया से उन्हें जाना पड़ा। इससे बड़ा नुक़सान क्या होगा!? इससे भी मज़े की बात यह है कि इनमें से कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें वह सारा मालो-दौलत दिया ही नहीं गया जिस का वादा किया गया था, दुनिया में भी घाटा और आख़ेरत में भी घाटा! कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें करबला के बाद अपने किये पर पछतावा भी हुआ लेकिन अब पछताने से किया हो सकता था। कुछ दिनों के बाद जनाबे मुख़्तार ने इमामे हुसैन[अ०] के क़ातिलों को एक एक करके ख़त्म करना शुरू कर दिया और आसानी से नहीं बल्कि हर आदमी के साथ वैसा ही सुलूक किया जैसा उस ने इमाम हुसैन[अ०] के साथ किया था।

**सवाल-9:** हदीस की किताबों में ऐसी बहुत सी हदीसें मिलती हैं जिनमें हमारे इमामों ने इमाम हुसैन[अ०] पर गिरये और अज़ादारी को बेहतरीन से बेहतरीन शक्ल में ज़िन्दा रखने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया है। हर वह चीज़ जो करबला और आशूरा से किसी भी तरह जुड़ जाए वह मुक़द्दस हो जाती है। सवाल यह है कि इमाम हुसैन[अ०] पर गिरये और अज़ादारी पर इतना ज़ोर क्यों दिया गया है?

**जवाब:** जाहिर सी बात है कि इमाम हुसैन[अ०] पर गिरये और अज़ादारी का अपना एक ख़ास सवाब तो है ही,

इस सवाब के अलावा इसके कुछ दुसरे फ़ायदे भी हैं जिनको हम इस तरह बयान कर सकते हैंः

**पहला फ़ायदाः** अज़ादारी के बारे में हमारे इमामों के इतने अधिक ज़ोर देने का एक बड़ा फ़ायदा तो यही है कि इससे इमामे हुसैन[अ०] के मक़सद यानी दीनदारी और इस्लामी Values, इंसाफ़ पसन्दी, ज़ुल्म और ज़ालिम से मुक़ाबला सुनने वालों के लिए बार बार बयान होता रहे ताकि अमली तौर पर उस मुक़द्दस मक़सद को हासिल करने के लिए दिलो-जान से कोशिश करते रहें और यही वह चीज़ है जिस से अज़ादारी और गिरया बहुत ख़ास हो जाता है।

**दूसरा फ़ायदाः** अज़ादारी के द्वारा यज़ीद, उसके साथियों और दूसरे सारे ज़ालिमों की करतूत बयान की जाती हैं, ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई जाती है। यह खुद अज़ादारी का एक बहुत बड़ा फ़ायदा है।

**तीसरा फ़ायदाः** अज़ादारी के द्वारा इमामे हुसैन[अ०], उनके ख़ानदान और उनके साथियों की मज़लूमियत बयान की जाती है जिस को सुनकर सुनने वालों के दिल पसीज जाते हैं। यह बात तो सब ही जानते हैं कि दिल जब नर्म होता है तो अच्छी बातों को आसानी से मान लेता है और करबला हमें इमामे हुसैन[अ०] के रास्ते पर चलने और बुराईयों से दूर रहने का सबक़ देती है। अगर हमारे दिल पसीजे हुए और नर्म हों तो हम आसानी से इस पैग़ाम को सुन सकते और इस पर अमल कर सकते हैं।

# आमाले आशूरा

इमाम जाफ़र सादिक[अ०]

जो भी ख़ुलूसे दिल से इस अमल को बजा लाएगा, ख़ुदा उसको अगले साल तक अचानक होने वाली मौतों जैसे डूब कर मरने, आग में जलने और मकान के नीचे दबकर मरने से बचाये रखेगा और कोई दुश्मन उसपर हावी नहीं हो सकेगा।

हज़रत इमामे हुसैन (अ०)

ऐसे लोगों में से न हो जाना जो दूसरों के गुनाहों के बारे में तो परेशान रहते हैं लेकिन अपने गुनाहों को भूल जाते हैं।

# शबे आशूर के आमाल

इमामे जाफ़रे सादिक़[अ०] फरमाते हैं कि जो आदमी आशूर की रात इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत पढ़े, गिरयाओ ज़ारी करते हुए रात बिताए और अल्लाह की इबादत करता रहे तो वह क़यामत के दिन करबला के शहीदों की तरह खून में शराबोर पहुंचेगा

**शबे आशूर चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ इस तरह पढ़ना मुस्तहब है:-**

- पहली रकअत में **अलहम्द** के बाद दस बार **आ-य-तुलकुर्सी**
- दूसरी रकअत में **अलहम्द** के बाद दस बार **कुल हुवल्लाहु अ-ह़द**
- तीसरी रकअत में **अलहम्द** के बाद दस बार **कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़्**
- चौथी रकअत में **अलहम्द** के बाद दस बार **कुलअऊज़ु बिरब्बिन्-नास**

नमाज़ पूरी होने के बाद सौ बार **कुल हुवल्लाहु अ-ह़द** भी मुस्तहब है।

# रोज़े आशूर के आमाल

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि इस दिन जो शख़्स इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत पढ़े, हज़रत की मुसीबत पर आंसू बहाए, अपने घर वालों और तमाम मिलने-जुलने वालों के सामने इमाम हुसैन[अ०] के मसाएब का तज़किरा करे, अपने घर में मजलिस करे, आपस में एक दूसरे से रो-रो कर मुलाक़ात करे और एक दूसरे को इस तरह पुरसा दे तो अल्लाह उसे बहुत सवाब देगाः

" अज़-ज़-मल्लाहु उजू-रना व उजू-रकुम "

**आशूर के दिन नीचे दिए गए आमाल बजा लाने की बहुत फ़ज़ीलत बयान हुई हैः-**

1- बगैर रोज़े की नियत के फ़ाक़ा रखना और अस्र के कुछ देर बाद पानी से इफ़्तार करना।

2- पाकीज़ा कपड़े पहनना और गरेबान खुला रखना।

3- दुखी लोगों की तरह आस्तीनों को कोहनी तक चढ़ा लेना।

4- दिन चढ़े जंगल या घर की छत पर जाकर 2-2 रकअत करके 4 रकअत नमाज़ इस तरह पढ़नाः-

•पहली रकअत में **अलहम्द** के बाद **कुल या अय्युहल काफ़िरून**

•दूसरी रकअत में **अलहम्द** के बाद **कुल हुवल्लाहु अ-ह़द**

•तीसरी रकअत में **अलहम्द** के बाद **सूर-ए-अहज़ाब**

•चौथी रकअत में **अलहम्द** के बाद **सूर-ए-मुनाफ़िकून**

(यह सूरे याद न हों तो जो भी सूरे याद हों वह पढ़े)

5- नमाज़ के बाद इमाम[अ०] के रौज़े की तरफ़ मुंह करके सलवात भेजना और आपके कातिलों पर हज़ार बार इस तरह लानत करना:- **"अल्लाहुम्मल अ़न क़-त-ल-तल हुसैनि व असह़ाबिह"**

6- जिस जगह खड़े हों उससे कुछ क़दम आगे बढ़ें और सात बार कहें:

**इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, रिज़न बि-क़-ज़ा-इही व तस्लीमन् लि अम्रिह।**

इसके बाद अपनी जगह पर वापस होकर पढ़ें:

अल्लाहुम-म अज़्ज़िबिल फ़ज्र-र-तल्लज़ी-न शाक़्क़ू रसू-ल-क व हा-रबू औलिया-अक। व अ़-ब-दू ग़ै-र-क वस्-तह़ल्लू महारि-मक। वल-अनिल क़ा-द-त वल अतूबा-अ व मन का-न मिनूहुम फ़ख़ब्बा व औ-ज़-अ म-अ़-हुम औ रज़ि-य बि फ़िअ़-लिहिम् लअ़नन कसीरा, अल्लाहुम-म व अज्जिल फ़-र-ज आलि मुह़म्मदिवं वजूअ़ल् स-ल-वा-त-क अलैहि व अलैहिम वस्तन्क़िज़्-हुम मिन ऐदिल मुनाफ़िक़ी-नल मुज़िल्लीन, वल क-फ़-रतिल जाहिदी-न वफ़्तह् लहुम फ़त्हंय्यसी-र व-अतिह लहुम रौह़ंव व फ़-र-जन क़रीबा, वज्अ़ल लहुम मिल-ल-दुन्-क अ़ला अदुव्वि-क व अदुव्वि-हिम सुल्तानन् नसी-र।

फिर दुआ के लिए हाथ उठाकर आले मुहम्मद[अ०] के दुश्मनों को निशाना बनाकर कहे:

अल्लाहुम-म इन्ना कसीरम-मिनल उम्मति ना-स-बतिल मुस्तह-फ़िज़ी-न मिनल अइम्मति व क-फ़-रत बि कलि-मति व अ़-क-फ़त अ़लल-क़ा-दतिज़् ज़-ल-मति व ह-ज-रतिल किता-ब वस-सुन-न-त व अ़-द-लत् अनिल ह़बलैनिल्लज़ी-न अमर-त बि-ताअ़तिहि-मा वत्तमस्सुकि बिहिमा फ़-अमाततिल ह़क्-क़ व ह़ादत अनिल क़स्दि व मा-लअ-तिल अह़ज़ा-बि व ह़र्रफ़तिल किता-ब व क-फ़-रत

बिल हक़्क़ि लम्मा जा-अहा व तमस-सकत बिल बातिलि लम्मा अ़-त-र-ज़हा व ज़य्यिअ़त् ह़क़्-क़्-क व अज़ल्लत् ख़ल्-क़्-क व क़्-त-लत् अवला-द नबिय्य-क व ख़ि-य-र-त इ़बादि-क व ह-म-ल-त इल्मि-क व व-र-स-त हिकमति-क व वह़यि-क अल्लाहुम-म फ़-ज़ल-ज़िल् अक़्दा-म अअ़दाइ-क व अअ़दाइ रसूलि-क व अहलिबैति रसूलिक्।

अल्लाहुम-म वख़्रिब दिया-र-हुम वफ़्लुल सिला-ह़-हुम व ख़ालिफ़ बै-न कलि-मति-हिम व फ़ुत्ता फ़ी अअ़ज़ा-दिहिम व अव-हिन कै-द-हुम वज़्-रिब्-हुम बिसैफ़ि-कल क़ाति-इ़, वर-मि-हिम बि-ह-ज-रिकद्-दामिग़्, व तुम-म-हुम बिल बला-इ तम्मा, व कुम-म-हुम बिल अज़ाबे कुम्मा व अज़्-ज़िब्-हुम अज़ाबन नुकरा व ख़ुज़्-हुम् बिस-सिनी-न वल मु-स-लातिल-लती अह्लक्-त बिहा अअ़दा-अ-क इन-न-क जू-निक़-मतिम-मिनल मुजरिमीन।

अल्लाहुम-म इन-न सुन-न-त-क ज़ा-इ-अ़-तुन व अह़का-म-क मु-अ़त-त-लतुन व इत-र-त नबिय्यि-क फ़िल अर्ज़ि हा-इ-मतुन अल्लाहुम-म फ़-अ-इ़निल हक़्क़ा व अह्-लहू अक़्-मि-इ़ल बाति-ल व अह्-लहू व मुन-न अ़लैना बिन-नजा-ति वह-दिना इलल ईमानि व अ़ज्जिल फ़-र-जना वन-ज़िम-हू बि-फ़-र-जि अवलियाइ-क

वज-अ़ल-हुम लना वुद्दा वज्अ़ल-न लहुम वफ़्दा।

अल्लाहुम-म व अहलिक मन ज-अ़-ल यौ-म क़त्लिव-नि नबिय्यि-क व ख़ि-य-रति-क ई-दा, वस-तह़लु-ला बिही फ़-र-जंव व म-रह़ा, व ख़ुज़ अख़ि-र-हुम कमा अख़ज़्-त अव-व-ल-हुम व ज़ाइफ़् अल्लाहुम्मल अज़ा-ब वत्तनकी-ल अ़ला ज़ालिमि अहलिबैति नबिय्य-क व अहलिक् अश्या-अ़हुम व क़ा-द-त-हुम व अबरि हुमा-तहुम व जमा-अ़-त-हुम अल्लाहुम-म व ज़ाईफ़ स-ल-वा-त-क व रह़-म-त-क व ब-र-का-त-क अ़ला इ़तरति नबिय्यि-कल-इतरतिज़-ज़ाइ्-अ़तिल ख़ाइ-फ़तिल मुस-तज़िल-लति बक़िय्यतिम मिनश-श-ज-रतित तय्यि-बतिज़ ज़ाकि-यतिल मुबारि-कह।

व-अअ्-लि अल्लाहुम-म कलि-म-त-हुम व अफ़्लिज हुज-ज-तहुम वकशिफ़िल बला-अ वल्लावा-अ व ह़नादिसल अबात़ीलि वल-अ़मा अ़नूहुम व सब्बित कुलू-ब शीअ़तिहिम् व हिज़्बि-क अ़ला ताअ़ति-क व विलायतिहिम् व नुसरतिहिम् व मुवालातिहिम् व अइ्न-हुम वम्-नह़-हुमुस्सब्-र अलल अज़ा फ़ी-क वज्अ़ल् हुम् अय्यामम् मशहूदह, व अवक़ातम महमू-द-तम मसऊ़दह तूशिकु फ़ीहा फ़-र-ज-हुम व तूजिबु फ़ीहा तमकी-नहुम व नस्-र-हुम् कमा ज़मिन्-त लिअवलियाइ-क फ़ी किताबिकल मुन्ज़लि फ़इन-न-क क़ुल-त

व कौलुकल ह़क़्।

व-अ़-दल्लाहुल् लज़ी-न आ-मनू मिन्कुम् व अमिलुस-सालिह़ाति लियस्-तख़्लिफ़न-नहुम् फ़िल अर्ज़ि कमस-तख़-ल-फ़ल्लज़ी-न मिन क़बलिहिम् वल युमक्कि-नन्-न लहुम दी-न-हुमुल-लज़िर-तज़ा लहुम् व-ला युबद-दिलन्-नहुम मिम बअ़दि ख़ौफ़िहिम् अम्नंय यअ़बुदू-ननी ला युशरिकू-न बी शै-अ।

अल्लाहुम-म फ़क्शिफ़् ग़ुम-म-त-हुम या मल्ला यमलिकु कश-फ़ज़्-ज़ुर्रि इल्ला हु-व या वाह़िदु या अ-ह़-दु या ह़य्यु या क़य्यूमु व अना या इलाही अ़ब्दुकल ख़ाइफ़ु मिन्-क वर्राजिउ इलै-कस-साइलु लकल मुक़्बिलु अ़लै-कल-लाजि-ऊ इला फ़िना-इ-कल आ़लिमु बिअन्-न-हु ला मल-ज-अ़ मिन्-क इल्ला इलैक।

अल्लाहुम-म फ़-तक़ब्बल दुआ़ई वस्-मअ़, या इलाही अला नि-य-ती व नज़्वाया वज्अ़लनी मिम्मन् रज़ी-त अ-म-ल-हू व क़बिल-त नुसु-कहू व नज्जै-त-हु बिरह़्-मति-क इन-न-क अन्तल अ़ज़ीज़ुल करीम।

अल्लाहुम-म व सल्लि अव्व-लन व आख़ि-रन अ़ला मुह़म्मदिंव व आलि मुह़म्मद् व बारिक् अ़ला मुह़म्मदिंव व आलि मुह़म्मद् वर्हम् मुह़म्मदंव व आ-ल मुह़म्मद् बिअक-मलि व अफ़्ज़लि मा सल्लै-त व बा-रक्-त व तरह़्-ह़म्-त अ़ला अंबियाइ-क व रुसुलि-क व मलाइ-कति-क व ह़-म-लति अ़र्शि-क बि-ला-इलाहा

इल्ला अन्-त अल्लाहुम-म ला तुफ़र्रिक़ बैनी व बैना मुहम्मदिंव व आलि मुहम्मद् स-ल-वातु-क अ़लैहि व अ़लैहिम वजूअ़ल्नी या मौला-य मिन शीअ़ति मुहम्मदिंव व अ़लिय्यिंव व फ़ाति-म-त वल ह़-स-नि वल हुसैनि व ज़ुर्रिय्यति-हिमुत-ताहि-रतिल मुन-त-ज-बह व हब-लियत् तमस्सु-क बि-हब्लि-हिम् वर्रिज़ा बि-सबीलिहिम् वल-अख़्-ज़ बि-तरी-क़तिहिम् इन-न-क जवादुन् करीम।

फिर सजदे में जाए और गाल को ज़मीन पर रख कर कहे:

या मंय यह़कुमु मा यशा-उ व यफ़-अ़लु मा युरीदु अन्-त ह़कम-त फ़-लकल ह़म्दु मह़मूदम् मशकूरा फ़-अ़ज्जिल या मौला-य फ़-र-ज-हुम व फ़-र-ज-ना बिहिम् फ़-इन-न-क ज़मिन्-त एअ़-ज़ा-ज़-हुम बअ़-दज़-ज़िल्लति व तकसी-र-हुम बअ़्दल क़िल्लति व इज़्हा-र-हुम बअ़्दल ख़ुमूलि या अस्-द-क़स् सादिक़ीन व या अर्ह़मर राहिमीन, फ़-असअलु-क या इलाही व सय्यिदी मु-त-ज़र्रि-अ़न इलै-क बिजूदि-क व क-र-मि-क बस्-त अ़-म-ली वत्तजावु-ज़ अन्नी व क़बू-ल क़लीलि अ़-म-ली व कसी-रीह् वज़्ज़िया-द-त फ़ी अय्यामी व तब्लीग़ी ज़ालिकल मश्-ह-द व-अन् तज्-अ़-ल-नी मिम्मंय युद्अ़ा फ़-युजीबु इला ताअ़ति-हिम् व मुवालाति-हिम् व नस्रि-हिम् व

तुरि-य-नी ज़ालि-क क़रीबन सरीअ़न फ़ी आ़फ़ि-यतिन इन-न-क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

फिर आसमान की तरफ़ देखे और कहे:

अ-ऊ-ज़ु बि-क मिन अन अकू-न मिनल-ल-ज़ी-न ला यरजू-न अय्या-म-क फ़-अइज़्नी या इलाही बि-रह-म-ति-क मिन ज़ालिक्।

# ज़ियारत

## आशूर का दिन ढलते वक़्त

आशूर का दिन ढलते समय यह ज़ियारत पढ़ना चाहिए:

अस्सलामु अलै-क या वारि-स आ-द-म सफ़्वतिल्लाह , अस्सलामु अलै-क या वारि-स नूहिन् नबिय्यिल्लाह, अस्सलामु अलै-क या वारि-स इब्राही-म ख़लीलिल्लाह, अस्सलामु अलै-क या वारि-स मूसा कलीमिल्लाह, अस्सलामु अलै-क या वारि-स ईसा रुहिल्लाह , अस्सलामु अलै-क या वारि-स मुहम्-मदिन हबीबिल्लाह, अस्सलामु अलै-क या वारि-स अ़लिय्यिन् अमीरिल मुमिनीन, अस्सलामु अलै-क या वारिसल ह-स-निश शहीदि सिब्ति रसूलिल्लाह, अस्सलामु अलै-क यब्-न रसूलिल्लाह, अस्सलामु अलै-क यब्नल

बशीरिन् नज़ीर, वब्-न सय्यिदिल वसिय्यीन, अस्सलामु अलै-क यब्-न फ़ाति-म-तज़-ज़हरा, सय्यि-दति निसा-इल आ़-लमीन, अस्सलामु अलै-क या अबा अ़ब्दिल्लाह, अस्सलामु अलै-क या ख़ि-य-र-तल्लाहि वब्-न ख़ि-य-रतिह, अस्सलामु अलै-क या सारल्लाहि वब्-न सारिह, अस्सलामु-अलै-क अय्यु-हल वितरुल मौतूर, अस्सलामु-अलै-क अय्युहल इमामुल हादिज़ ज़की व अ़ला अरवाह़िन ह़ल्लत बि-फ़िनाइ-क व अक़ामत् फ़ी जवारिक्। व व-फ़-दत् म-अ़ ज़ुव्वारिक्। अस्सलामु अ़लै-क मिन्नी मा बक़ीतु व बक़ियल लैलु वन्-नहार। फ़-ल-क़द् अज़ुमत बि-कर-रज़िय्यतु व जल्लत् मुसाबु फ़िल मुमिनी-न व फ़िल मुस्लिमी-न व फ़ी अहलिस-समा-वाति अज-मईन व फ़ी सुक्कानिल अ-र-ज़ीन। फ़-इन्-ना लिल्लाहि व इन-ना इलैहि राजिऊन। व स-ल-वातुल्लाहि व ब-र-कातु-हु व तह़िय्यातु-हु अलै-क व अ़ला आबा-इ-कत-ताहि-रीनत-तय्यि-बीनल मुन्-त-ज-बीन। व अ़ला ज़रा-रीहि-मिल हुदातिल मह्दिय्यीन। अस्सलामु अलै-क या मौला-य व अ़लैहिम व अ़ला रूह़ि-क व अ़ला अरवा-ह़ि-ह़िम् व अ़ला तुर-बति-क व अ़ला तुर-बति-हिम। अल्लाहुम्-म लक़्क़ि-हिम् रह़-म-तंव् व रिज़वानंव् व रौह़ंव व रैह़ाना। अस्सलामु अलै-क या मौला-य या अबा अब्दिल्लाह। यब्-न ख़ा-त-मिन-नबिय्यीन व यब्-न सय्यिदिल

वसिय्यीन व यब्-न सय्यि-द-ति निसाइल आ़-ल-मीन। अस्सलामु-अ़लै-क या शहीदु यब्-निश-शहीद। या अ-ख़श शहीदि या अबश शु-ह-दा। अल्लाहुम्-म बल्लिग़-हु अ़न्नी फ़ी हाज़िहिस्-सा-अ़ति व फ़ी हाज़ल यौमि व फ़ी हाज़ल वक़्ति व फ़ी कुल्लि वक्तिन तहि़य-यतन कसी-र-तन व सला-म। सलामुल्लाहि अलै-क व रह़-म-तुल्लाहि व ब-र-कातुहू, यब-न सय्यिदिल आ़-ल-मी-न व अ़लल् मुस्तश्-हदी-न म-अ़क, सलामम मुत्तसि-ल, मत-त-स-लल् लैलु वन्-नहार। अस्सलामु अ़लल् हुसैनिब्नि अलिय्यिनिश् शहीद। अस्सलामु अ़ला अ़लियिब-निल हुसैनिश् शहीद। अस्सलामु अ़ला अब्बासिब-नि-अमीरिल मुमिनी-नश-शहीद,अस्सलामु अलश-शु-हदा-इ मिंव-वुल्दि अमीरिल मुमिनीन। अस्सलामु अ़लश् शु-ह-दाइ मिन वुलदिल हसन। अस्सलामु अलश् शु-ह-दा-इ मिन वुलदिल हुसैन। अस्सलामु अ़लश् शु-ह-दाइ मिन वुल्दि जअ़-फ़रिंव व अ़कील। अस्सलामु अ़ला कुल्लि मुस्तश्-हदिम म-अ़-हुम मिनल मु-मिनीन। अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुह़म्-म-दिंव व आलि मुह़म्मद् व बल्लिग़हुम अ़न्नी तहि़य-य-तन कसी-र-तंव व सला-म। अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह, अह़-स-नल्लाहु लकल अ़ज़ा-अ फ़ी व-ल-दिकल हुसैन। अस्सलामु अलैकि या फ़ाति-मतु, अह़-स-नल्लाहु लकिल अज़ा-अ फ़ी व-ल-दिकिल हुसैन।

अस्सलामु अलै-क या अमीरल मुमिनीन, अह़-स-नल्लाहु लकल अज़ा-अ फी व-ल-दिकल हुसैन। अस्सलामु अ़लै-क या अबा मुह़म्मदि-निल-ह़-स-नि, अह़्-सनल्लाहु लकल अज़ा-अ फ़ी अख़ीकल हुसैन। या मौला-य या अबा अब्दिल्लाहि अना ज़ैफ़ुल्लाहि व ज़ैफ़ुक, व जारूल्लाहि व जारुक्। वलि कुल्लि ज़ैफ़िन व जारिन क़िरन व क़िरा-य फ़ी हाज़ल वक़्त। अन-तस-अ़लल्ला-ह सुब्ह़ा-नहु व तआ़ाला अंय यर-ज़ु-क़-नी फ़का-क र-क़-बती मिनन् नार। इन-नहु समीऊद्दुआ़-इ क़रीबुम-मुजीब।

दीने इस्लाम और मासूमीन(अ०) की तालीमात को लागों तक पहुंचाना हम सब की ज़िम्मेदारी है और इसी ज़िम्मेदारी का एहसास करते हुऐ पिछले कई सालों से ताहा फ़ाउण्डेशन ऐसी किताबों को प्रिन्ट कर रहा है जो इस्लामी मैसेज को समाज तक पहुंचाती हैं।

अगर आप भी इस मैसेज को आगे बढ़ाने में तआवुन करना चाहते हैं तो आइए हम और आप एक साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं। इस तरह यह मैसेज जल्दी और ज़ियादा लोगों तक पहुंच जाएगा।

عَلَيْكَ يَا اَبَامُحَمَّدٍ اَلْحَسَنِ اَحْسَنَ اَللّٰهُ لَكَ اَلْعَزَاءَ فِی اَخِيْكَ اَلْحُسَيْنِ، يَا مَوْلَایَ يَا اَبَا عَبْدِاللّٰهِ اَنَا ضَيْفُ اللّٰهِ وَ ضَيْفُكَ وَ جَارُاللّٰهِ وَ جَارُكَ وَلِكُلِّ ضَيْفٍ وَ جَارٍ قِرًی وَ قِرَایَ فِی هٰذَا الْوَقْتِ اَنْ تَسْئَلَ اللّٰهَ سُبْحَانَهٗ وَ تَعَالٰی اَنْ يَرْزُقَنِی فَكَاكَ رَقَبَتِی مِنَ اَلنَّارِ۔ اِنَّهٗ سَمِيْعُ اَلدُّعَاءِ قَرِيْبٌ مُجِيْبٌ۔

امام جعفر صادقؑ فرماتے ہیں کہ جو بھی روز عاشور خلوص دل سے ان اعمال کو بجالائیگا، خداوند عالم اسکو اگلے سال تک اچانک ہونے والی موتوں جیسے ڈوب کر مرنے، آگ میں جل کر مرنے اور مکان میں دب کر مرنے سے محفوظ رکھے گا اور کوئی دشمن اس پر حاوی نہیں ہوسکے گا۔

دین اسلام اور چہاردہ معصومینؑ کی تعلیمات کو لوگوں تک پہونچانا ہم سب کی ذمہ داری ہے اور اسی ذمہ داری کا احساس کرتے ہوئے **طٰہٰ فاؤنڈیشن** پچھلے کئی برسوں سے ایسی کتابوں کی اشاعت کررہا ہے جو اسلامی پیغام کو سماج تک پہونچاتی ہیں۔

اگر آپ بھی اس پیغام کو آگے بڑھانے میں تعاون کرنا چاہتے ہیں تو آیئے ہم اور آپ ایک ساتھ ملکر آگے بڑھتے ہیں۔ اس طرح یہ پیغام وسیع پیمانے پر اور زیادہ لوگوں تک پہونچ جائے گا۔

فِى هٰذِهِ اَلسَّاعَةِ وَفِى هٰذاَ اَلْيَوْمِ وَفِى هٰذَا اَلْوَقْتِ وَفِى كُلِّ
وَقْتٍ تَحِيَّةً كَثِيْرَةً وَ سَلاماً ،سَلَامُ اَللّٰهِ عَلَيْكَ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ
بَرَكَاتُهُ يَا بْنَ سَيِّدِ الْعَالَمِيْنَ وَ عَلٰى اَلْمُسْتَشْهَدِيْنَ مَعَكَ سَلاماً
مُتَّصِلاً مَا اتَّصَلَ اَللَّيْلُ وَ اَلنَّهَارُ. اَلسَّلَامُ عَلَى اَلْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ
اَلشَّهِيْدِ ، اَلسَّلَامُ عَلٰى عَلِيِّ بْنِ اَلْحُسَيْنِ اَلشَّهِيْدِ، اَلسَّلَامُ عَلَى
اَلْعَبَّاسِ بْنِ اَمِيْرِ اَلْمُؤْمِنِيْنَ اَلشَّهِيْدِ، اَلسَّلَامُ عَلٰى اَلشُّهَدَاءِ مِنْ
وُلْدِ اَمِيْرِ اَلْمُؤْمِنِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلٰى اَلشُّهَدَاءِ مِنْ وُلْدِ اَلْحَسَنِ،
اَلسَّلَامُ عَلٰى اَلشُّهَدَاءِ مِنْ وُلْدِ اَلْحُسَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلٰى اَلشُّهَدَاءِ
مِنْ وُلْدِ جَعْفَرٍ وَ عَقِيْلٍ، اَلسَّلَامُ عَلٰى كُلِّ مُسْتَشْهَدٍ مَعَهُمْ مِنَ
اَلْمُؤْمِنِيْنَ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ بَلِّغْهُمْ عَنِّى
تَحِيَّةً كَثِيْرَةً وَ سَلاماً ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَحْسَنَ اللّٰهُ
لَكَ اَلْعَزَاءَ فِى وَلَدِكَ اَلْحُسَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ اَحْسَنَ
اَللّٰهُ لَكِ اَلْعَزَاءَ فِى وَلَدِكِ اَلْحُسَيْنِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ
اَلْمُؤْمِنِيْنَ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَكَ اَلْعَزَاءَ فِى وَلَدِكَ اَلْحُسَيْنِ. اَلسَّلَامُ

اَللّٰهِ وَ اَبْنَ خِيَرَتِهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَارَ اللّٰهِ وَ اَبْنَ ثَارِهِ، اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا الْوِتْرُ الْمَوْتُورُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا الْاِمَامُ الْهَادِى
الزَّكِىُّ وَ عَلٰى اَرْوَاحٍ حَلَّتْ بِفِنَائِكَ وَ اَقَامَتْ فِى جِوَارِكَ، وَ
وَفَدَتْ مَعَ زُوَّارِكَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ مِنِّى مَا بَقِيتُ وَ بَقِىَ اللَّيْلُ وَ
النَّهَارُ، فَلَقَدْ عَظُمَتْ بِكَ الرَّزِيَّةُ ،وَ جَلَّ الْمُصَابُ فِى الْمُؤْمِنِينَ
وَفِى الْمُسْلِمِينَ وَفِى اَهْلِ السَّمٰاوَاتِ اَجْمَعِينَ وَ فِى سُكَّانِ
الْاَرَضِينَ فَاِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُونَ وَ صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ
تَحِيَّاتُهُ عَلَيْكَ وَ عَلٰى اٰبَائِكَ الطَّاهِرِينَ الطَّيِّبِينَ الْمُنْتَجَبِينَ وَ
عَلٰى ذَرَارِيهِمِ الْهُدَاةِ الْمَهْدِيِّينَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَوْلَاىَ وَ
عَلَيْهِمْ، وَ عَلٰى رُوحِكَ وَ عَلٰى اَرْوَاحِهِمْ، وَ عَلٰى تُرْبَتِكَ وَ عَلٰى
تُرْبَتِهِمْ ـ اَللّٰهُمَّ لَقِّهِمْ رَحْمَةً وَ رِضْوَانًا وَ رَوْحاً وَرَيْحَاناً ـ اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ يَا مَوْلَاىَ يَا اَبَا عَبْدِاللّٰهِ، يَا بْنَ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ وَ يَا بْنَ
سَيِّدِ الْوَصِيِّينَ وَ يَابْنَ سَيِّدَةِ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا
شَهِيدُ يَا بْنَ الشَّهِيدِ يَا اَخَا الشَّهِيدِ يَا اَبَا الشُّهَدَاءِ اَللّٰهُمَّ بَلِّغْهُ عَنِّى

# زیارت

## عاشورا کا دن ڈھلتے وقت

عاشورا کا دن ڈھلتے وقت یہ زیارت پڑھنا چاہیے جو دراصل دیگر آئمہ علیہم السلام کے لئے پڑھی ہے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ آدَمَ صَفْوَةِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ نُوحٍ نَبِيِّ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ اِبْرَاهِيمَ خَلِيلِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُوسَىٰ كَلِيمِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عِيسَىٰ رُوحِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ مُحَمَّدٍ حَبِيبِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ عَلِيٍّ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَارِثَ الْحَسَنِ الشَّهِيدِ سِبْطِ رَسُولِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ رَسُولِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ الْبَشِيرِ النَّذِيرِ وَ ابْنَ سَيِّدِ الْوَصِيِّينَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ سَيِّدَةِ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا عَبْدِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَرَةَ

اسکے بعد سجدے میں جا کے رخسار خاک پر رکھ کے کہے:

يَا مَنْ يَحْكُمُ مَا يَشَآءُ وَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ اَنْتَ حَكَمْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ مَحْمُوْداً مَشْكُوراً فَعَجِّلْ يَا مَوْلَایَ فَرَجَهُمْ وَ فَرَجَنَا بِهِمْ فَاِنَّكَ ضَمِنْتَ اِعْزَازَهُمْ بَعْدَ الذِّلَّةِ وَ تَكْثِيْرَهُمْ بَعْدَ الْقِلَّةِ وَ اِظْهَارَهُمْ بَعْدَ الْخُمُوْلِ يَا اَصْدَقَ الصَّادِقِيْنَ وَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ فَأَسْئَلُكَ يَا اِلٰهِی وَ سَيِّدِی مُتَضَرِّعاً اِلَيْكَ بِجُوْدِكَ وَكَرَمِكَ بَسْطَ اَمَلِی وَ التَّجَاوُزَ عَنِّی وَقَبُوْلَ قَلِيْلِ عَمَلِی وَ كَثِيْرِهٖ وَ الزِّيَادَةَ فِی اَيَّامِی وَ تَبْلِيْغِی ذٰلِكَ الْمَشْهَدَ وَ اَنْ تَجْعَلَنِی مِمَّنْ يُدْعٰی فَيُجِيْبُ اِلٰی طَاعَتِهِمْ وَ مُوَالَاتِهِمْ وَ نَصْرِهِمْ وَ تُرِيَنِی ذٰلِكَ قَرِيْباً سَرِيْعاً فِیْ عَافِيَةٍ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ۔

پھر آسمان کی طرف ہاتھ اٹھا کر کہے:

اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَكَ فَاَعِذْنِی يَا اِلٰهِی بِرَحْمَتِكَ مِنْ ذٰلِكَ۔

وَ الرَّاجِعُ اِلَيكَ السَّآئِلُ لَكَ الْمُقْبِلُ عَلَيكَ اللَّاجِئُ اِلىٰ فِنَآئِكَ الْعَالِمُ بِاَنَّهُ لا مَلجَأَ مِنكَ اِلَّا اِلَيكَ۔

اَللّٰهُمَّ فَتَقَبَّلْ دُعَائِيْ وَ اسْمَعْ يَا اِلٰهِي عَلَانِيَتِي وَ نَجوَايَ وَ اجْعَلْنِي مِمَّنْ رَضِيتَ عَمَلَهُ وَ قَبِلتَ نُسُكَهُ وَ نَجَّيْتَهُ بِرَحْمَتِكَ اِنَّكَ اَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ۔

اَللّٰهُمَّ وَ صَلِّ اَوَّلًا وَ آخِراً عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَارْحَمْ مُحَمَّداً وَّ آلَ مُحَمَّدٍ بِاَكْمَلِ وَ اَفْضَلِ مَا صَلَّيتَ وَبَارَكتَ وَتَرَحَّمتَ عَلٰى اَنبِيَآئِكَ وَرُسُلِكَ وَ مَلآئِكَتِكَ وَ حَمَلَةِ عَرْشِكَ بِلَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنتَ اَللّٰهُمَّ لَا تُفَرِّقْ بَيْنِي وَ بَيْنَ مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُكَ عَلَيْهِ وَ عَلَيهِمْ وَ اجْعَلْنِي يَا مَوْلَايَ مِنْ شِيْعَةِ مُحَمَّدٍ وَّ عَلِيٍّ وَّ فَاطِمَةَ وَ الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ وَ ذُرِّيَّتِهِمِ الطَّاهِرَةِ الْمُنْتَجَبَةِ وَهَبْ لِيَ التَّمَسُّكَ بِحَبْلِهِمْ وَ الرِّضَا بِسَبِيْلِهِمْ وَ الْاَخْذَ بِطَرِيقَتِهِمْ اِنَّكَ جَوَّادٌ كَرِيْمٌ۔

وَ اَعْلِ اَللّٰهُمَّ كَلِمَتَهُمْ وَ اَفْلِجْ حُجَّتَهُمْ وَ اَكْشِفِ الْبَلَآءَ وَ اللَّاوَاءَ وَ حَنَادِسَ الْاَبَاطِيْلِ وَ الْعَمٰى عَنْهُمْ وَ ثَبِّتْ قُلُوْبَ شِيْعَتِهِمْ وَ حِزْبِكَ عَلٰى طَاعَتِكَ وَوِلَايَتِهِمْ وَ نُصْرَتِهِمْ وَ مُوَالَاتِهِمْ وَ اَعِنْهُمْ وَامْنَحْهُمُ الصَّبْرَ عَلَى الْاَذٰى فِيْكَ لَهُمْ وَ اجْعَلْهُمْ اَيَّامًا مَّشْهُوْدَةً وَ اَوْقَاتًا مَّحْمُوْدَةً مَّسْعُوْدَةً تُوْشِكُ فِيْهَا فَرَجُهُمْ وَتُوْجِبُ فِيْهَا تَمْكِيْنَهُمْ وَ نَصْرَهُمْ كَمَا ضَمِنْتَ لِاَوْلِيَآئِكَ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ فَاِنَّكَ قُلْتَ وَ قَوْلُكَ الْحَقُّ۔

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَّعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا۔

اَللّٰهُمَّ فَاكْشِفْ غُمَّتَهُمْ يَا مَنْ لَّا يَمْلِكُ كَشْفَ الضُّرِّ اِلَّا هُوَ۔ يَا وَاحِدُ يَا اَحَدُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ وَ اَنَا يَا اِلٰهِيْ عَبْدُكَ الْخَآئِفُ مِنْكَ

بِالْعَذَابِ قَمّاً وَعَذِّبْهُمْ عَذَاباً نُكْراً وَ خُذْهُمْ بِالسِّنِينَ وَ الْمَثُلَاتِ

الَّتِي اَهْلَكْتَ بِهَا اَعْدَائَكَ اِنَّكَ ذُوْنِقْمَةٍ مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ۔

اَللّٰهُمَّ اِنَّ سُنَّتَكَ ضَائِعَةٌ وَ اَحْكَامَكَ مُعَطَّلَةٌ وَعِتْرَةَ نَبِيِّكَ فِي

الْاَرْضِ هَائِمَةٌ۔ اَللّٰهُمَّ فَاَعِنِ الْحَقَّ وَ اَهْلَهُ وَ اَقْمَعِ الْبَاطِلَ وَ

اَهْلَهُ وَ مُنَّ عَلَيْنَا بِالنَّجَاةِ وَاهْدِنَا اِلَى الْاِيْمَانِ وَ عَجِّلْ فَرَجَنَا وَ

اُنْظِمْهُ بِفَرَجِ اَوْلِيَآئِكَ وَ اجْعَلْهُمْ لَنَا وُدّاً وَاجْعَلْنَا لَهُمْ وَفْداً۔

اَللّٰهُمَّ وَ اَهْلِكْ مَنْ جَعَلَ يَوْمَ قَتْلِ ابْنِ نَبِيِّكَ وَخِيَرَتِكَ

عِيْداً وَ اسْتَهَلَّ بِهٖ فَرَجاً وَمَرَحاً وَ خُذْ آخِرَهُمْ كَمَا اَخَذْتَ

اَوَّلَهُمْ وَضَاعِفِ اللّٰهُمَّ الْعَذَابَ وَالتَّنْكِيْلَ عَلٰى ظَالِمِيْ اَهْلِ

بَيْتِ نَبِيِّكَ وَاَهْلِكْ اَشْيَاعَهُمْ وَ قَادَتَهُمْ وَ اَبِرْ حُمَاتَهُمْ

وَجَمَاعَتَهُمْ۔ اَللّٰهُمَّ وَضَاعِفْ صَلَوَاتِكَ وَ رَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ

عَلٰى عِتْرَةِ نَبِيِّكَ الْعِتْرَةِ الضَّائِعَةِ الْخَائِفَةِ الْمُسْتَذَلَّةِ بَقِيَّةٍ مِنَ

الشَّجَرَةِ الطَّيِّبَةِ الزَّاكِيَةِ الْمُبَارَكَةِ۔

پھر دعا کے لئے ہاتھ اٹھا کر آل محمد علیہم السلام کے دشمنوں کا قصد کرے اور کہے:

اَللّٰهُمَّ اِنَّ كَثِيراً مِنَ الْاُمَّةِ نَاصَبَتِ الْمُسْتَحْفِظِيْنَ مِنَ الْاَ ئِمَّةِ وَ كَفَرَتْ بِالْكَلِمَةِ وَ عَكَفَتْ عَلَى الْقَادَةِ الظَّلَمَةِ وَ هَجَرَتِ الْكِتَابَ وَ السُّنَّةَ وَ عَدَلَتْ عَنِ الْحَبْلَيْنِ الَّذِيْنَ اَمَرْتَ بِطَاعَتِهِمَا وَ التَّمَسُّكِ بِهِمَا فَاَمَاتَتِ الْحَقَّ وَ حَادَتْ عَنِ الْقَصْدِ وَ مَالَأَتِ الْاَحْزَابِ وَ حَرَّفَتِ الْكِتَابَ وَ كَفَرَتْ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَ هَا وَ تَمَسَّكَتْ بِالْبَاطِلِ لَمَّا اَعْتَرَضَهَا وَ ضَيَّعَتْ حَقَّكَ وَ اَضَلَّتْ خَلْقَكَ وَ قَتَلَتْ اَوْلَادَ نَبِيِّكَ وَ خِيَرَةَ عِبَادِكَ وَ حَمَلَةَ عِلْمِكَ وَ وَرَثَةَ حِكْمَتِكَ وَوَحْيِكَ اَللّٰهُمَّ فَزَلْزِلْ اَقْدَامَ اَعْدَائِكَ وَ اَعْدَآءِ رَسُوْلِكَ وَ اَهْلِ بَيْتِ رَسُوْلِكَ۔

اَللّٰهُمَّ وَ اَخْرِبْ دِيَارَهُمْ وَاَفْلُلْ سِلَاحَهُمْ وَ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَ فُتَّ فِيْ اَعْضَادِهِمْ وَاَوْهِنْ كَيْدَهُمْ وَاَضْرِبْهُمْ بِسَيْفِكَ الْقَاطِعِ وَ اَرْمِهِمْ بِحَجَرِكَ الدَّامِغِ وَطُمَّهُمْ بِالْبَلَاءِ طَمًّا وَ قُمَّهُمْ

☆ چوتھی رکعت میں الحمد کے بعد سورہ منافقون

(اگر یہ سورے یاد نہ ہوں تو جو بھی سورے یاد ہوں پڑھے)

(۵)۔ بعد نماز آپکی اور آپکے اعزا اور اصحاب کی شہادت کا خیال دل میں لا کر

سلام اور آپکے قاتلوں پر اس طرح ہزار مرتبہ لعنت کرنا۔

اَللّٰهُمَّ الْعَنْ قَتَلَةَ الْحُسَيْنِ وَ اَصْحَابِهٖ

(۷)۔ جس جگہ کھڑا ہو اس سے چند قدم آگے بڑھے اور ۷ مرتبہ کہے:

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن، رِضاً بِقَضَائِهٖ وَ تَسْلِيْماً لِاَمْرِهٖ

اسکے بعد اپنی جگہ پر واپس ہو کر پڑھے:

اَللّٰهُمَّ عَذِّبِ الْفَجَرَةَ الَّذِيْنَ شَاقُّوا رَسُوْلَكَ وَ حَارَبُوْا اَوْلِيَآئَكَ وَ عَبَدُوْا غَيْرَكَ وَ اسْتَحَلُّوْا مَحَارِمَكَ وَالْعَنِ الْقَادَةَ وَ الْاَتْبَاعَ وَمَنْ كَانَ مِنْهُمْ فَخَبَّ وَ اَوْضَعَ مَعَهُمْ اَوْ رَضِيَ بِفِعْلِهِمْ لَعْناً كَثِيْراً اَللّٰهُمَّ وَ عَجِّلْ فَرَجَ آلِ مُحَمَّدٍ وَ اجْعَلْ صَلَوَاتِكَ عَلَيْهِ وَ عَلَيْهِمْ وَ اسْتَنْقِذْهُمْ مِنْ اَيْدِي الْمُنَافِقِيْنَ الْمُضِلِّيْنَ وَ الْكَفَرَةِ الْجَاحِدِيْنَ وَ افْتَحْ لَهُمْ فَتْحاً يَسِيْرًا وَ اَتِحْ لَهُمْ رَوْحاً وَ فَرَجاً قَرِيْباً وَ اجْعَلْ لَهُمْ مِنْ لَّدُنْكَ عَلٰى عَدُوِّكَ وَ عَدُوِّهِمْ سُلْطَاناً نَصِيْراً۔

# اعمال روز عاشورا

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں کہ جو شخص اس دن حضرت امام حسینؑ کی زیارت بجالائے۔ حضرتؑ کی مصیبت پر خوب روئے، اپنے گھر والوں اور جملہ متعلقین کو بھی رونے کا حکم دے، اپنے گھر میں عزائے حسینؑ کا اہتمام کرے، دوسروں سے رو کر ملاقات کرے اور ان الفاظ میں پرسہ دے تو خداوند عالم اسکو اجر عظیم عنایت فرمائے گا:

عَظَّمَ اللّٰهُ اُجُوْرَنَا وَ اُجُوْرَكُمْ

عاشورا کے دن مندرجہ ذیل اعمال بجالانے کی بہت فضیلت وارد ہوئی ہے:

(۱)۔ بغیر روزہ کی نیت کے فاقہ رکھنا اور عصر کے بعد ایک ساعت گزر جانے پر پانی سے افطار کرنا۔

(۲)۔ پاکیزہ کپڑے پہننا اور بند قبا کھولنا۔

(۳)۔ مصیبت زدہ لوگوں کی طرح آستینوں کو کہنیوں تک چڑھا لینا۔

(۴)۔ دن چڑھے جنگل یا چھت پر جا کر خضوع و خشوع سے دو دو رکعت کر کے چار رکعت نماز مندرجہ ذیل طریقہ سے پڑھنا:

☆ پہلی رکعت میں الحمد کے بعد سورہ قل یا ایہا الکافرون

☆ دوسری رکعت میں الحمد کے بعد سورہ قل ھو اللہ

☆ تیسری رکعت میں الحمد کے بعد سورہ احزاب

# اعمال شب عاشورا

حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں:

''جو شخص شب عاشورا حضرت امام حسین علیہ السلام کی زیارت بجالائے، گریہ وزاری کے ساتھ شب بیداری کرے اور عبادت الٰہی میں مشغول رہے تو وہ بروز قیامت شہدائے کربلا کی طرح اپنے خون میں آلودہ محشور ہوگا اور جو شخص شب عاشورا زیارت امام حسینؑ بجالائے تو ایسا ہے گویا حضرتؑ کی نصرت میں آپ کے سامنے شہید ہوا ہو۔

**اس شب چار رکعت نماز دو سلام کے ساتھ مندرجہ ذیل طریقہ سے پڑھنا مستحب ہے:**

☆ پہلی رکعت میں سورۂ **الحمد** کے بعد دس مرتبہ **آیۃ الکرسی**

☆ دوسری رکعت میں سورۂ **الحمد** کے بعد دس مرتبہ سورۂ **قل ھو اللہ**

☆ تیسری رکعت میں سورۂ **الحمد** کے بعد دس مرتبہ سورۂ **قل اعوذ برب الفلق**

☆ چوتھی رکعت میں سورۂ **الحمد** کے بعد دس مرتبہ سورۂ **قل اعوذ برب النّاس**

نماز کے بعد ۱۰۰ مرتبہ سورۂ **قل ھو اللہ** پڑھنا بھی مستحب ہے

حضرت امام حسین علیہ السلام:

ایسے لوگوں میں سے نہ ہو جانا جو دوسروں کے گناہوں کے بارے میں تو فکر مند رہتے ہیں لیکن اپنے گناہوں سے غافل ہو جاتے ہیں۔

# اعمالِ عاشورا



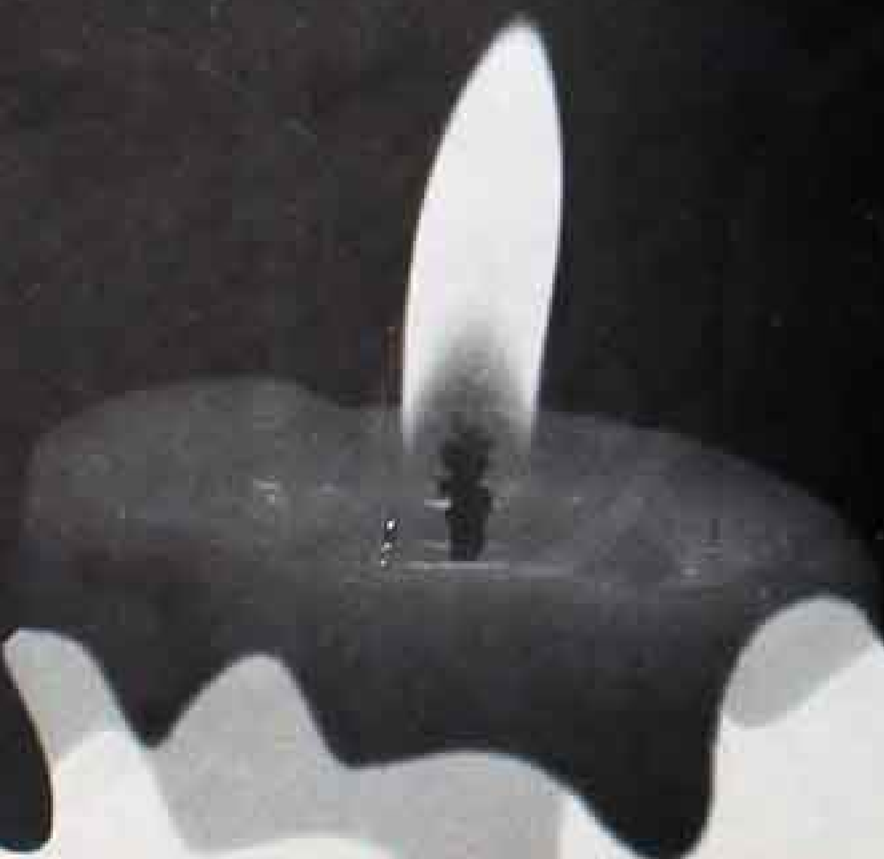
**TAHA FOUNDATION**

LUCKNOW-INDIA



انسانیت کے نام

# کربلا کا پیغام



TAHA FOUNDATION

Lucknow-India